08 सूरए अनफ़ाल

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 1-5 (सूरए अनफाल)

आयत 1 (सूरए अनफाल, 8:1)

अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम से लोग अनफाल (माले ग़नीमत) के बारे में पूछा करते हैं तुम कह दो कि अनफाल मख़सूस ख़ुदा और रसूल के वास्ते है तो ख़ुदा से डरो (और) अपने बाहमी (आपसी) मामलात की असलाह करो और अगर तुम सच्चे (ईमानदार) हो तो ख़ुदा की और उसके रसूल की इताअत करो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **अनफाल का निर्धारण और तर्क (Determination of Booty and Logic)**: **इस आयत में यह कहा गया है कि माले ग़नीमत (लूट का माल) केवल ख़ुदा और उसके रसूल के लिए है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत कारण या विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया गया है।** Nyaya **दर्शन के अनुसार, किसी भी आदेश का ठोस और तर्कसंगत कारण होना चाहिए। इसमें केवल धार्मिक आदेश दिया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि अनफाल का निर्धारण क्यों ख़ुदा और उसके रसूल के लिए विशेष रूप से किया गया है।**

2. **आपसी मामलों का सुधार (Reconciliation of Disputes)**: **आयत में यह भी कहा गया है कि अपने आपसी मामलों में सुधार करें, लेकिन इसका कारण या तर्क यहां भी स्पष्ट नहीं है।** Nyaya **के अनुसार, किसी भी आदेश का उद्देश्य और कारण स्पष्ट किया जाना चाहिए, जो इस आयत में गायब है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Hetu**" (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई ठोस तर्क नहीं दिया गया है कि अनफाल को ख़ुदा और रसूल के लिए क्यों मख़सूस किया गया है और आपसी विवादों का सुधार क्यों जरूरी है।**

आयत 2 (सूरए अनफाल, 8:2)

अनुवाद: "सच्चे ईमानदार तो बस वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल हिल जाते हैं और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनके इमान को और भी ज़्यादा कर देती हैं और वह लोग बस अपने परवरदिगार ही पर भरोसा रखते हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Prameya (Object of Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **ईमान का आधार (Basis of Faith): आयत में कहा गया है कि ईमानदार वही होते हैं जो ख़ुदा के ज़िक्र से प्रभावित होते हैं और उनके इमान को और बढ़ावा मिलता है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि इस इमान का कोई ठोस तर्क या प्रमाण क्या है। Nyaya दर्शन में, वस्तु (Prameya) का ज्ञान तब तक अधूरा होता है, जब तक उसका उद्देश्य और उपयोग स्पष्ट न हो। इस आयत में ईमान का संदर्भ दिया गया है, लेकिन इसके तर्क और प्रमाण का कोई उल्लेख नहीं है।**

2. **आध्यात्मिक अनुभव का विज्ञान (Spiritual Experience and Science): इस आयत में आध्यात्मिक अनुभव की बात की गई है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी सत्य का निर्धारण तर्क और प्रमाण के माध्यम से होना चाहिए, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ईमान के अनुभव को बिना किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार के प्रस्तुत किया गया है।

आयत 3 (सूरए अनफाल, 8:3)

अनुवाद: "नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया हैं उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**

विश्लेषण:

1. **नमाज़ का पालन (Adherence to Prayer): आयत में नमाज़ को पाबंदी से अदा करने की बात की गई है, लेकिन इसका कारण और तर्क स्पष्ट नहीं किया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी धार्मिक कार्य का पालन तर्कसंगत कारण पर आधारित होना चाहिए, लेकिन यहां केवल एक आदेश दिया गया है, जिसका कोई विश्लेषणात्मक आधार नहीं है।**
2. **राहे ख़ुदा में खर्च (Spending in the Way of God): यह भी कहा गया है कि जो कुछ भी ख़ुदा ने दिया है, उसमें से खर्च करें, लेकिन इसका भी कोई तर्क नहीं दिया गया कि क्यों और कैसे यह ख़र्च करना आवश्यक है। Nyaya दर्शन में इस प्रकार के आदेशों के लिए ठोस कारणों की आवश्यकता होती है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें नमाज़ के पालन और ख़र्च करने का कोई ठोस तर्क या कारण नहीं दिया गया है।

आयत 4 (सूरए अनफाल, 8:4)

अनुवाद: "यही तो सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के लिए उनके परवरदिगार के हाँ (बड़े बड़े) दरजे हैं और बक्शीश और इज़्ज़त और आबरू के साथ रोज़ी है (ये माले ग़नीमत का झगड़ा वैसा ही है)।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण:

1. **ईमानदारों के लिए इनाम (Reward for the Faithful): आयत में यह कहा गया है कि ईमानदारों के लिए बड़े दरजे, बक्शीश और इज़्ज़त है, लेकिन इसका कोई ठोस तर्क या कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है। Nyaya दर्शन में किसी भी घटना का परिणाम एक निश्चित और प्रमाणित होना चाहिए, जो यहां अनुपस्थित है।**
2. **समानता का सिद्धांत (Principle of Equality): यह आयत धार्मिक विश्वास के आधार पर पुरस्कार देने की बात करती है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी पुरस्कार या दंड का निर्धारण तर्क और प्रमाण के आधार पर किया जाना चाहिए, जो इस आयत में नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ईमानदारों के लिए इनाम का कोई ठोस और प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 5 (सूरए अनफाल, 8:5)

अनुवाद: "जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें बिल्कुल ठीक (मसलहत से) तुम्हारे घर से (जंग बदर) में निकाला था और मोमिनीन का एक गिरोह (उससे) नाखुष था।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **जंग बदर का संदर्भ (Context of Battle of Badr): आयत में जंग बदर का संदर्भ दिया गया है, लेकिन इस युद्ध के कारणों और परिणामों का कोई तर्कसंगत विश्लेषण नहीं किया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, कोई भी घटना या परिणाम तब तक समझ में नहीं आता, जब तक उसका कारण और परिणाम स्पष्ट न हो।**
2. **नाखुशी का कारण (Reason for Discontent): इस आयत में यह बताया गया है कि मोमिनीन का एक गिरोह नाखुश था, लेकिन इसका कारण और तर्क स्पष्ट नहीं किया गया है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें युद्ध और उसके परिणाम का कोई स्पष्ट तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है।

सारांश:

इन आयतों में धार्मिक आदेश और विश्वासों का उल्लेख किया गया है, लेकिन Nyaya दर्शन के तर्क, प्रमाण, और वस्तु के ज्ञान के सिद्धांतों से यह मेल नहीं खाते। इनमें दी गई शिक्षाएं केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जिनमें तर्कसंगत और वैज्ञानिक आधार की कमी है।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 6-10 (सूरए अनफाल)

आयत 6 (सूरए अनफाल, 8:6)

अनुवाद: "कि वह लोग हक़ के ज़ाहिर होने के बाद भी तुमसे (ख़्वाह माख़्वाह) सच्ची बात में झगड़तें थें और इस तरह (करने लगे) गोया (ज़बरदस्ती) मौत के मुँह में ढकेले जा रहे हैं (6)"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **झगड़ा और मृत्यु का संदर्भ (Dispute and the Reference to Death): आयत में यह कहा गया है कि लोग सच्ची बात के बावजूद झगड़ते थे और जैसे वे मौत के मुँह में ढकेले जा रहे थे, लेकिन यह कोई स्पष्ट कारण या तर्क नहीं प्रस्तुत करता कि वे इस झगड़े में क्यों लिप्त थे। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटनाक्रम का ठोस कारण होना चाहिए। यहां पर, केवल एक दृश्य और मानसिक अवस्था का वर्णन किया गया है, लेकिन इस पर कोई तर्कसंगत कारण नहीं दिया गया।**
2. **झगड़ा करने का कारण (Cause of Dispute): यह आयत यह बताती है कि लोग हक़ के सामने आने के बाद भी झगड़ते थे, लेकिन इसका कारण और उसकी तर्कसंगत व्याख्या गायब है। Nyaya दर्शन में किसी भी घटना का कारण विश्लेषित किया जाना चाहिए, जो इस आयत में नदारद है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Hetu" (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें झगड़े का कोई स्पष्ट तर्क या कारण नहीं दिया गया है।

आयत 7 (सूरए अनफाल, 8:7)

अनुवाद: "और उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हैं और (ये वक़्त था) जब ख़ुदा तुमसे वायदा कर रहा था कि (कुफ्फार मक्का) दो जमाअतों में से एक तुम्हारे लिए ज़रूरी हैं और तुम ये चाहते थे कि कमज़ोर जमाअत तुम्हारे हाथ लगे (ताकि बग़ैर लड़े भिड़े माले ग़नीमत हाथ आ जाए) और ख़ुदा ये चाहता था कि अपनी बातों से हक़ को साबित (क़दम) करें और काफिरों की जड़ काट डाले।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **दो जमातों का वादा (Promise of Two Parties): इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा ने दो जमातों में से एक का चयन किया था, लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया कि यह चयन किस आधार पर हुआ था और इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया। Nyaya के सिद्धांत "Vyapti" के अनुसार, किसी भी घटना का परिणाम और कारण एक सामान्य और स्थिर तरीके से जुड़ा होना चाहिए, जो इस आयत में स्पष्ट नहीं है।**

2. **हक़ का प्रमाण और काफिरों की जड़ काटना (Proof of Truth and Eradication of the Disbelievers): आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा हक़ को साबित करना चाहता था और काफिरों की जड़ काटना चाहता था, लेकिन यह कैसे और क्यों किया जा रहा था, इसका कोई विश्लेषणात्मक आधार या तर्क नहीं दिया गया।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें हक़ के प्रमाण और काफिरों की जड़ काटने का कारण और तर्क स्पष्ट नहीं किया गया है।

आयत 8 (सूरए अनफाल, 8:8)

अनुवाद: "ताकि हक़ को (हक़) साबित कर दे और बातिल का मिटियामेट कर दे अगर चे गुनाहगार (कुफ्फार उससे) नाखुश ही क्यों न हो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **हक़ का प्रमाण (Proof of Truth): आयत में कहा गया है कि ख़ुदा हक़ को साबित करना चाहता है और बातिल को नष्ट करना चाहता है, लेकिन इसका कोई विश्लेषण या तर्क नहीं दिया गया है कि यह कैसे और क्यों किया जा रहा है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का परिणाम और कारण स्थिर और प्रमाणिक होना चाहिए।**

2. **गुनाहगारों का नाखुश होना (Displeasure of the Sinners): आयत में यह कहा गया है कि काफ़िरों का इस बात से नाखुश होना स्वाभाविक है, लेकिन यह कैसे साबित किया जाता है, इसका कोई विश्लेषण नहीं है। Nyaya के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना का परिणाम एक सुसंगत और प्रमाणिक कारण से जुड़ा होना चाहिए।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें हक़ के प्रमाण और बातिल के नष्ट होने का कोई प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 9 (सूरए अनफाल, 8:9)

अनुवाद: "(ये वह वक़्त था) जब तुम अपने परवदिगार से फरियाद कर रहे थे उसने तुम्हारी सुन ली और जवाब दे दिया कि मैं तुम्हारी लगातार हज़ार फरिश्तों से मदद करूँगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

1. **फ़रिश्तों की मदद (Help of Angels): आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने फरिष्तों से मदद करने का वादा किया था, लेकिन इस कथन का कोई ठोस प्रमाण या ज्ञान का आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञात सत्य को प्रमाणिक स्रोत से स्थापित किया जाना चाहिए, लेकिन यहाँ पर केवल एक धार्मिक विश्वास का उल्लेख किया गया है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।**

2. **ग़ैबी मदद (Divine Help): आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा ने ग़ैबी मदद दी, लेकिन यह कैसे और क्यों हुआ, इसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया। Nyaya दर्शन में हर ज्ञान को प्रमाण, अनुभव या श्रुति से स्थापित किया जाना चाहिए, जो यहां अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ग़ैबी मदद और फरिष्तों के सहयोग का कोई ठोस प्रमाण या स्रोत नहीं दिया गया है।

आयत 10 (सूरए अनफाल, 8:10)

अनुवाद: "और (ये इमदाद ग़ैबी) ख़ुदा ने सिर्फ तुम्हारी ख़ातिर (ख़ुशी) के लिए की थी और तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाय और (याद रखो) मदद ख़ुदा के सिवा और कहीं से (कभी) नहीं होती बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **ग़ैबी मदद का कारण (Reason for Divine Help): आयत में कहा गया है कि यह ग़ैबी मदद ख़ुदा ने विशेष रूप से मानवों के लिए की थी, लेकिन इसका कोई ठोस तर्क या कारण नहीं दिया गया कि यह मदद क्यों दी गई थी। Nyaya दर्शन में किसी भी घटना का कारण स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए, जो यहां अनुपस्थित है।**
2. **सभी मदद का स्रोत (Source of All Help): यह आयत यह कहती है कि सभी मदद केवल ख़ुदा से आती है, लेकिन इसका कोई तार्किक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया कि यह क्यों सत्य है।**

निष्कर्ष:

यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ग़ैबी मदद के कारण का कोई ठोस तर्क या आधार नहीं दिया गया है।

सारांश:

इन आयतों में ग़ैबी मदद, फरिश्तों का सहयोग, और हक़ की जीत का वर्णन किया गया है, लेकिन इन घटनाओं का कोई तार्किक या तर्कसंगत आधार प्रस्तुत नहीं किया गया। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी सत्य का प्रमाण और तर्क महत्वपूर्ण होता है, जो इन आयतों में अनुपस्थित है। इन आयतों में केवल धार्मिक विश्वासों का उल्लेख किया गया है, जिनमें तर्क, प्रमाण, और वैज्ञानिक आधार का अभाव है।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 11-15 (सूरए अनफाल)

आयत 11 (सूरए अनफाल, 8:11)

अनुवाद: "ये वह वक़्त था जब अपनी तरफ से इत्मिनान देने के लिए तुम पर नींद को ग़ालिब कर रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरस रहा था ताकि उससे तुम्हें पाक (पाकीज़ा कर दे और तुम से शैतान की गन्दगी दूर कर दे और तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे और पानी से (बालू जम जाए) और तुम्हारे क़दम ब क़दम (अच्छी तरह) जमाए रहे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **नींद और आसमान से पानी (Sleep and Rain from the Sky): इस आयत में नींद और पानी का उल्लेख किया गया है कि ये ईश्वर से विशेष रूप से भेजी गई मदद थी, ताकि यह मुस्लिमों के दिल को मज़बूत करे और शैतान की गंदगी को दूर कर दे। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान या सत्य को प्रमाणित करने के लिए इसे किसी ज्ञेय (object of knowledge) के साथ एक स्पष्ट और प्रमाणिक तरीका से जोड़ना आवश्यक है। यहां, नींद और पानी को ईश्वर की मदद के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है। नींद और पानी प्राकृतिक घटनाएँ हैं, जिनका ईश्वर से सीधा संबंध स्थापित करना तर्कसंगत नहीं लगता।**

2. **पाकी और शैतान की गंदगी (Purification and Satan's Filth): यह विचार कि पानी से शैतान की गंदगी दूर हो जाती है, एक धार्मिक विश्वास है, लेकिन इसका कोई ठोस तर्क या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। Nyaya दर्शन में, सत्य को परिभाषित करने के लिए प्रमाणिक और भौतिक आधारों की आवश्यकता होती है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pramana (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए उदाहरणों (नींद और पानी) का कोई प्रमाणिक आधार या वैज्ञानिक तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है। यह केवल एक धार्मिक विश्वास है जिसे प्रमाणित या अनुभवजन्य तरीके से सत्यापित नहीं किया जा सकता।

आयत 12 (सूरए अनफाल, 8:12)

अनुवादः "(ऐ रसूल ये वह वक़्त था) जब तुम्हारा परवरदिगार फरिश्तों से फरमा रहा था कि मैं यकीनन तुम्हारे साथ हूँ तुम ईमानदारों को साबित क़दम रखो मैं बहुत जल्द काफिरों के दिलों में (तुम्हारा रौब) डाल दूँगा (पस फिर क्या है अब) तो उन कुफ्फार की गर्दनों पर मारो और उनकी पोर पोर को चटिया कर दो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **फरिश्तों की मदद (Angelic Assistance): इस आयत में यह कहा गया है कि फरिश्तों से मदद दी गई और काफिरों के दिलों में रौब डाल दिया गया, लेकिन इसका कोई ठोस कारण या तर्क नहीं दिया गया कि यह क्यों किया गया। Nyaya दर्शन में, किसी भी कार्य या घटना का कारण स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए। यहां पर यह सिर्फ एक दावा किया गया है कि फरिश्तों से मदद दी गई, लेकिन इसका कोई प्रमाण या कारण नहीं बताया गया है कि यह कैसे और क्यों हुआ।**
2. **काफिरों के खिलाफ सजा (Punishment Against Disbelievers): आयत में काफिरों के खिलाफ विशेष सजा का उल्लेख है, लेकिन इसका तर्क यह स्पष्ट नहीं करता कि क्यों काफिरों को इतनी कठोर सजा दी गई। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी न्यायपूर्ण कार्य का कारण और तर्क स्पष्ट होना चाहिए।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें फरिश्तों की मदद और काफिरों के खिलाफ सजा देने के कारण का कोई स्पष्ट तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 13 (सूरए अनफाल, 8:13)

अनुवादः "ये (सज़ा) इसलिए है कि उन लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफ की और जो शख़्स (भी) ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा तो (याद रहें कि) ख़ुदा बड़ा सख़्त अज़ाब करने वाला है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **सज़ा का कारण (Cause of Punishment): इस आयत में कहा गया है कि सज़ा इसलिए दी गई क्योंकि लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफत की। हालांकि यह स्पष्ट किया गया है कि यह सज़ा न्यायसंगत है, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि क्यों ऐसा करना न्यायपूर्ण था। Nyaya दर्शन में, किसी भी सजा या न्याय का कारण स्पष्ट रूप से दिया जाना चाहिए, ताकि वह न्यायपूर्ण और तार्किक रूप से स्वीकार्य हो।**
2. **आध्यात्मिक और भौतिक न्याय (Spiritual and Physical Justice): इस आयत में केवल एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सज़ा की बात की गई है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तार्किक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन में, हर कार्य और निर्णय का तर्क और प्रमाण आवश्यक है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें सज़ा देने का कारण स्पष्ट रूप से और तर्कसंगत रूप से बताया नहीं गया है।

आयत 14 (सूरए अनफाल, 8:14)

अनुवाद: "(काफिरों दुनिया में तो) लो फिर उस (सज़ा का चखो और (फिर आख़िर में तो) काफिरों के वास्ते जहन्नुम का अज़ाब ही है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Prameya (Object of Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **आध्यात्मिक सज़ा का वर्णन (Description of Spiritual Punishment): इस आयत में काफिरों के लिए जहन्नुम (नर्क) की सज़ा का उल्लेख है, जो एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से दिया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या भौतिक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन में, किसी भी सज़ा का प्रामाणिक और भौतिक आधार प्रस्तुत किया जाना चाहिए।**
2. **न्याय का उद्देश्य (Purpose of Justice): काफिरों के लिए नर्क की सज़ा का उद्देश्य केवल धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि क्यों यह सजा न्यायपूर्ण और उपयुक्त है। Nyaya दर्शन में, न्याय का उद्देश्य तर्क और कारण पर आधारित होना चाहिए।**

निष्कर्ष:

यह आयत Prameya (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें आध्यात्मिक सज़ा का कोई प्रमाण या भौतिक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 15 (सूरए अनफाल, 8:15)

अनुवाद: "ऐ ईमानदारों जब तुमसे कुफ़्फ़ार से मैदाने जंग में मुक़ाबला हुआ तो (ख़बरदार) उनकी तरफ पीठ न करना।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **पीठ न करने का आदेश (Order Not to Flee): आयत में कहा गया है कि ईमानदारों को जंग के मैदान में काफिरों से लड़ते समय पीठ नहीं करना चाहिए, लेकिन इसका कारण स्पष्ट नहीं किया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी आदेश या निर्देश का ठोस तर्क और कारण होना चाहिए, ताकि वह उस आदेश के पालन के लिए प्रेरणादायक हो।**

2. **सैन्य युद्ध की नैतिकता (Morality of Military Warfare): यह आयत युद्ध की नैतिकता और युद्ध के मैदान में ईमानदारों के व्यवहार के बारे में बात करती है, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि यह आदेश क्यों दिया गया और इसका क्या तर्क है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें युद्ध में भाग लेने के कारण का कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया है।

सारांश:

इन आयतों में विभिन्न धार्मिक आदेश और सज़ाएं दी गई हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश का कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी आदेश, निर्णय, या घटना का तर्क और कारण

स्पष्ट होना चाहिए। इन आयतों में अधिकांश तर्कों की कमी है, जो इसे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 16-20 (सूरए अनफाल)

आयत 16 (सूरए अनफाल, 8:16)

अनुवाद: "(याद रहे कि) उस शख़्स के सिवा जो लड़ाई वास्ते कतराए या किसी जमाअत के पास (जाकर) मौक़े पाए (और) जो शख़्स भी उस दिन उन कुफ़्फ़ार की तरफ पीठ फेरेगा वह यक़ीनी (हिर फिर के) ख़ुदा के ग़ज़ब में आ गया और उसका ठिकाना जहन्नुम ही हैं और वह क्या बुरा ठिकाना है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**

विश्लेषण:

1. **पीठ फेरे जाने का अपराध (Sin of Turning Back): इस आयत में यह कहा गया है कि जो काफिरों से युद्ध के समय पीठ फेरकर भागेगा, वह ईश्वर के ग़ज़ब का शिकार होगा। यहाँ पर यह माना जा रहा है कि युद्ध के मैदान में किसी के द्वारा पीठ फेरना एक अत्यधिक गंभीर अपराध है, लेकिन इसका कारण या तर्क नहीं बताया गया। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी सजा या कार्य का तर्क होना चाहिए। युद्ध में किसी व्यक्ति को क्यों पीठ फेरने का दंड दिया जाता है, इसका ठोस कारण यहां स्पष्ट नहीं किया गया है।**

2. **ग़ज़ब और सज़ा (Wrath and Punishment): इस आयत में ग़ज़ब की सज़ा का उल्लेख किया गया है, लेकिन इसका तर्क यह स्पष्ट नहीं करता कि यह सज़ा क्यों दी गई और क्यों विशेष रूप से युद्ध में भाग न लेने को एक अपराध माना गया। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी न्यायपूर्ण सजा का कारण तर्कसंगत और स्पष्ट होना चाहिए।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें सज़ा देने का कोई स्पष्ट और तार्किक कारण नहीं बताया गया है।

आयत 17 (सूरए अनफाल, 8:17)

अनुवाद: "और (मुसलमानों) उन कुफ़्फ़ार को कुछ तुमने तो क़त्ल किया नहीं बल्कि उनको तो ख़ुदा ने क़त्ल किया और (ऐ रसूल) जब तुमने तीर मारा तो कुछ तुमने नही मारा बल्कि ख़ुद ख़ुदा ने तीर मारा और ताकि अपनी तरफ से मोमिनीन पर खूब एहसान करे बेशक ख़ुदा (सबकी) सुनता और (सब कुछ) जानता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **क़त्ल का दावा (Claim of Killing): इस आयत में यह कहा गया है कि काफिरों को क़त्ल करने का असली कारण भगवान का आदेश था, न कि मुसलमानों का प्रयास। इस प्रकार, इस आयत में यह दावा किया गया है कि काफिरों के क़त्ल में मुसलमानों का कोई योगदान नहीं था। Nyaya दर्शन में, सत्य या ज्ञान के बारे में दावा करने से पहले उसका प्रमाणिक आधार होना चाहिए। यहाँ पर दावा किया जा रहा है कि भगवान ने तीर मारा और काफिरों को क़त्ल किया, लेकिन इसका कोई ठोस और प्रमाणिक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया।**
2. **तर्क और प्रमाण का अभाव (Lack of Reasoning and Evidence): इस आयत में कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया कि क्यों और कैसे भगवान ने तीर मारा और काफिरों को मारा। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य को प्रमाणित करने के लिए तर्क और सत्य का आधार देना आवश्यक है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pramana (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए दावों का कोई प्रमाण या ठोस आधार नहीं है।

आयत 18 (सूरए अनफाल, 8:18)

अनुवाद: "ये तो ये ख़ुदा तो काफिरों की मक्कारी का कमज़ोर कर देने वाला है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण:

1. **काफिरों की मक्कारी का कमजोर करना (Weakening the Schemes of Disbelievers): इस आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर काफिरों की मक्कारी को कमजोर करने वाला है। हालांकि यह एक धार्मिक दृषटिकोन से कहा गया है, लेकिन Nyaya दर्शन के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना या क्रिया का हर बार (invariable) घटित होना आवश्यक है। यह दावा किया जा रहा है कि ईश्वर हमेशा काफिरों की मक्कारी को कमजोर करेगा, लेकिन इसका कोई सामान्य नियम या प्रमाण नहीं दिया गया।**

2. **सिद्धांत के अनुपालन का अभाव (Absence of Universal Conformity): इस आयत में जो घटना का दावा किया गया है, वह हर स्थिति में लागू होने की संभावना नहीं है, और यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से कहा गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना के लिए यह आवश्यक है कि उसका परिणाम हर बार और हर जगह समान रूप से लागू हो, जो इस आयत में स्पष्ट नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो दावा किया गया है वह हर बार और हर स्थिति में सही नहीं हो सकता।

आयत 19 (सूरए अनफाल, 8:19)

अनुवाद: "(काफ़िर) अगर तुम ये चाहते हो (कि जो हक़ पर हो उसकी) फ़तेह हो (मुसलमानों की) फ़तेह भी तुम्हारे सामने आ मौजूद हुयी अब क्या गुरूर बाक़ी है और अगर तुम (अब भी मुख़तलिफ़ इस्लाम) से बाज़ रहो तो तुम्हारे वास्ते बेहतर है और अगर कहीं तुम पलट पड़े तो (याद रहे) हम भी पलट पड़ेगें (और तुम्हें तबाह कर छोड़ देगें) और तुम्हारी जमाअत अगरचे बहुत ज़्यादा भी हो हरगिज़ कुछ काम न आएगी और ख़ुदा तो यक़ीनी मामिनीन के साथ है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **अंतिम विजय का दावा (Claim of Final Victory): इस आयत में यह कहा गया है कि यदि काफिरों के खिलाफ संघर्ष जारी रहता है, तो ईश्वर मुसलमानों को विजय दिलाएगा। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे का आधार तर्क और प्रमाण से होना चाहिए। यहां पर यह दावा किया गया है कि ईश्वर हर बार मुसलमानों को विजय दिलाएगा, लेकिन इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया**

गया है कि यह हमेशा और हर परिस्थिति में सत्य होगा।

2. **सजा और पुरस्कार का कारण (Cause of Punishment and Reward): आयत में यह भी कहा गया है कि अगर काफिर फिर से मुकर जाते हैं तो उन्हें सजा दी जाएगी, लेकिन इसका कारण स्पष्ट नहीं किया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी सजा या पुरस्कार का तर्क और कारण स्पष्ट होना चाहिए, ताकि वह न्यायपूर्ण हो।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई विजय या सजा के कारण का कोई ठोस और तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 20 (सूरए अनफाल, 8:20)

अनुवाद: "(ऐ ईमानदारों खुदा और उसके रसूल की इताअत करो और उससे मुँह न मोड़ो जब तुम समझ रहे हो।)"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

1. **आज्ञाकारिता का आदेश (Command of Obedience): इस आयत में मुसलमानों को खुदा और उसके रसूल की आज्ञा मानने का आदेश दिया गया है। Nyaya दर्शन में, आदेशों और कृत्यों का ज्ञान प्रमाणित और भौतिक सत्य से जुड़ा होना चाहिए। यहां पर यह केवल धार्मिक आदेश है, लेकिन इसका कोई भौतिक या प्रमाणिक आधार नहीं है कि क्यों इसे पालन करना आवश्यक है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Prameya (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें आदेश के पालन का कोई भौतिक या प्रमाणिक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।

सारांश:

इन आयतों में विभिन्न आदेश और धार्मिक दावे किए गए हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश का कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य या आदेश का आधार तर्क और प्रमाण होना चाहिए। इन आयतों में कई बिंदुओं पर तर्क की कमी है, जो इसे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 21-25 (सूरए अनफाल)

आयत 21 (सूरए अनफाल, 8:21)

अनुवाद: **"और उन लोगों के ऐसे न हो जाओं जो (मुँह से तो) कहते थे कि हम सुन रहे हैं हालाकि वह सुनते (सुनाते ख़ाक) न थे।"**

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Prameya (Object of Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **सुनने का दावा और सत्यता (Claim of Hearing and its Truth):** **इस आयत में यह कहा गया है कि कुछ लोग मुँह से कहते थे कि वे सुन रहे हैं, लेकिन वास्तव में वे नहीं सुन रहे थे। Nyaya दर्शन में, किसी वस्तु या ज्ञान का सत्य होना आवश्यक है। यह आयत इस बात को प्रतिवादित करती है कि भले ही कोई व्यक्ति सुनने का दावा करे, अगर उसके क्रियाकलाप से यह सिद्ध नहीं होता, तो यह दाव़ा सत्य नहीं माना जा सकता। यहाँ पर "सुनने" का ज्ञान एक बाहरी गतिविधि से मेल नहीं खाता, जो दावे की सत्यता को सवालों के घेरे में डालता है।**

2. **ज्ञान की वास्तविकता (Reality of Knowledge):** **इस आयत में यह भी कहा गया कि केवल मुख से कहा जाना कि "हम सुन रहे हैं" पर्याप्त नहीं है। इस प्रकार, Prameya (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत से यह कहा जा सकता है कि ज्ञान की वास्तविकता उसी समय सिद्ध होती है जब क्रिया और दावा मेल खाते हैं।**

निष्कर्ष:

यह आयत Prameya (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि इसमें ज्ञान का असल प्रमाण केवल बयान करने से नहीं, बल्कि कार्य से ही सिद्ध होता है। यह दर्शाता है कि केवल शब्दों के माध्यम से कोई ज्ञान सत्य नहीं हो सकता जब तक वह व्यवहार में न दिखाई दे।

आयत 22 (सूरए अनफाल, 8:22)

अनुवाद: "इसमें शक नहीं कि ज़मीन पर चलने वाले तमाम हैवानात से बदतर ख़ुदा के नज़दीक वह बहरे गूँगे (कुफ्फार) हैं जो कुछ नहीं समझते।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**

विश्लेषण:

1. **बहरे गूँगे का विवरण (Description of Deaf and Mute): इस आयत में काफिरों को बहरे और गूँगे कहा गया है, जो कुछ नहीं समझते। यह कहा जा रहा है कि काफिरों की स्थिति जानवरों से भी बदतर है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी व्यक्ति के व्यवहार या स्थिति के लिए तर्क (Hetu) होना चाहिए, ताकि उसका मूल्यांकन सही तरीके से किया जा सके। यहाँ पर यह दावा किया गया है कि काफिरों की स्थिति जानवरों से भी खराब है, लेकिन इसका तर्क या कारण स्पष्ट नहीं किया गया है।**
2. **समानता का अभाव (Lack of Comparison): इस आयत में काफिरों के बारे में बहुत कठोर शब्दों का प्रयोग किया गया है, लेकिन इसके आधार पर कोई तर्क या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है कि क्यों उनका अस्तित्व जानवरों से भी बदतर माना जाएगा। यह केवल एक मूल्यांकन है, जो बिना किसी तर्क के किया गया है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए दावे का कोई ठोस और तर्कसंगत आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 23 (सूरए अनफाल, 8:23)

अनुवाद: "और अगर ख़ुदा उनमें नेकी (की बू भी) देखता तो ज़रूर उनमें सुनने की क़ाबलियत अता करता मगर ये ऐसे हैं कि अगर उनमें सुनने की क़ाबिलयत भी देता तो मुँह फेर कर भागते।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण:

1. **सुनने की क़ाबिलियत और परिणाम (Ability to Hear and Its Consequences): इस आयत में यह कहा गया है कि अगर काफिरों में अच्छाई होती तो भगवान उन्हें सुनने की क्षमता प्रदान करते, लेकिन चूँकि उन्होंने भागना तय किया है, इसलिए वे इस सुनने की क्षमता से वंचित हैं। Nyaya दर्शन में Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी घटना का परिणाम हर बार एक जैसे होना चाहिए। इस आयत में यह कहा गया है कि सुनने की क्षमता का परिणाम हमेशा एक जैसा होगा, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है कि काफिरों का भागने का निर्णय हर बार ऐसा ही होगा।**

2. **सिद्धांत का अनुपालन (Lack of Universal Conformity): आयत में यह कहा गया है कि काफिरों में अगर अच्छाई होती तो वे सुनने की काबिलियत प्राप्त करते, लेकिन यह हर व्यक्ति पर लागू नहीं हो सकता क्योंकि इस प्रकार के परिणाम हर परिस्थिति में समान रूप से लागू नहीं होते। Nyaya दर्शन में यह सिद्धांत है कि किसी भी सामान्य नियम का पालन हर बार और हर परिस्थिति में होना चाहिए, जो यहाँ पर अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो दावा किया गया है वह हर बार और हर स्थिति में लागू नहीं हो सकता।

आयत 24 (सूरए अनफाल, 8:24)

अनुवाद: "ऐ ईमानदारों जब तुम को हमारा रसूल (मोहम्मद) ऐसे काम के लिए बुलाए जो तुम्हारी रूहानी ज़िन्दगी का बाइस हो तो तुम ख़ुदा और रसूल के हुक्म दिल से कुबूल कर लो और जान लो कि ख़ुदा वह क़ादिर मुतल्लिक़ है कि आदमी और उसके दिल (इरादे) के दरमियान इस तरह आ जाता है और ये भी समझ लो कि तुम सबके सब उसके सामने हाज़िर किये जाओगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **हुक्म का स्वीकार करना (Accepting the Command): इस आयत में मुसलमानों से कहा गया है कि वे ईश्वर और उसके रसूल के हुक्म को स्वीकार करें, क्योंकि यह उनकी रूहानी जीवन के लिए आवश्यक है। Nyaya दर्शन में, किसी भी आदेश का स्वीकार करने के लिए उसका प्रमाणिक आधार होना चाहिए। इस आयत में, हुक्म को स्वीकार करने के लिए केवल धार्मिक विश्वास का आधार दिया गया है, लेकिन इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया कि यह हुक्म क्यों और कैसे उनकी रूहानी ज़िन्दगी के लिए आवश्यक है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pramana (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए आदेश का कोई प्रमाण या ठोस आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 25 (सूरए अनफाल, 8:25)

अनुवाद: "और उस फितने से डरते रहो जो ख़ास उन्हीं लोगों पर नही पड़ेगा जिन्होने तुम में से ज़ुल्म किया (बल्कि तुम सबके सब उसमें पड़ जाओगे) और यक़ीन मानों कि ख़ुदा बड़ा सख़्त अज़ाब करने वाला है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **फितने का डर और परिणाम (Fear of Trial and Its Consequences): इस आयत में कहा गया है कि सभी लोग एक फितने (परीक्षा) से डरें, क्योंकि यह केवल ज़ुल्म करने वालों पर नहीं आएगा, बल्कि सभी पर इसका असर पड़ेगा। Nyaya दर्शन में, किसी भी दावे का कारण और तर्क होना चाहिए। यहां पर यह दावा किया गया है कि यह परीक्षा सभी पर आएगी, लेकिन इसका कारण या तर्क नहीं दिया गया है।**

2. **सज़ा और कारण (Punishment and Its Cause): इस आयत में यह कहा गया है कि ज़ुल्म करने वालों को सजा मिलेगी, लेकिन यह भी कहा गया है कि सजा सभी को मिलेगी। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी सजा का कारण और तर्क स्पष्ट होना चाहिए, जो यहाँ पर अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई सज़ा का कोई ठोस और तर्कसंगत कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

सारांश:

इन आयतों में विभिन्न धार्मिक आदेश और दावा किए गए हैं, लेकिन उनमें तर्क और प्रमाण की कमी है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य का न्यायपूर्ण होना आवश्यक है, और इसके लिए तर्क, प्रमाण, और कारण का होना आवश्यक है, जो इन आयतों में कई बार अनुपस्थित है।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 26-30 (सूरए अनफाल)

आयत 26 (सूरए अनफाल, 8:26)

अनुवाद: "मुसलमानों वह वक़्त याद करो जब तुम सर ज़मीन (मक्के) में बहुत कम और बिल्कुल बेबस थे, उससे सहमे जाते थे कि कहीं लोग तुमको उचक न ले जाए तो ख़ुदा ने तुमको (मदीने में) पनाह दी और ख़ास अपनी मदद से तुम्हारी ताईद की और तुम्हे पाक व पाकीज़ा चीज़े खाने को दी ताकि तुम शुक्र गुज़ारी करो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **इम्तेहान और मदद (Test and Help):** इस आयत में यह कहा गया है कि मुसलमानों को पहले मक्का में शोषण और भय का सामना करना पड़ा, लेकिन बाद में उन्हें मदीना में पनाह दी गई और ख़ुदा की मदद से उन्हें ताकत मिली। Nyaya दर्शन में, किसी भी परिणाम के लिए कारण (Hetu) आवश्यक होता है। यहाँ पर यह कहा गया है कि मुसलमानों को ख़ुदा ने मदद दी और सुरक्षित किया, लेकिन इसके पीछे कोई तर्क नहीं दिया गया है कि यह मदद क्यों दी गई। केवल एक विश्वास प्रस्तुत किया गया है, जिसका तात्त्विक कारण और कारण की व्याख्या नहीं की गई।

2. **शुक्र गुज़ारी का आग्रह (Urging Gratitude):** आयत में यह कहा गया है कि मुसलमानों को ख़ुदा ने सुरक्षित किया और उन्हें पाक चीज़ें दीं ताकि वे शुक्र अदा करें, लेकिन इसका कारण साफ़ तौर पर स्पष्ट नहीं किया गया।

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए सहायता और धन्यवाद के कारण का कोई विश्लेषण या तर्क नहीं दिया गया है।

आयत 27 (सूरए अनफाल, 8:27)

अनुवाद: "ऐ ईमानदारों न तो ख़ुदा और रसूल की (अमानत में) ख़्यानत करो और न अपनी अमानतों में ख़्यानत करो हालाँकि समझते बूझते हो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

1. **अमानत की रक्षा (Safeguarding Trust): इस आयत में मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि वे ख़ुदा और रसूल की अमानतों के साथ धोखा न करें, और अपनी अमानतों को भी सही तरीके से निभाएं। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी आदेश का पालन करने के लिए उसके प्रमाण (Pramana) का होना आवश्यक है। यहाँ पर अमानत की रक्षा का आदेश दिया गया है, लेकिन इसका कोई तार्किक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया कि क्यों यह आदेश हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है।**
2. **नैतिकता और न्याय (Ethics and Justice): यह आदेश एक नैतिक सिद्धांत की तरह प्रस्तुत किया गया है, जो किसी भी समाज में व्यवहार के सही तरीके को निर्धारित करता है, लेकिन इसे प्रमाणिक आधार से जोड़ने का प्रयास नहीं किया गया है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pramana (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इस आदेश का कोई प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 28 (सूरए अनफाल, 8:28)

अनुवाद: "और यक़ीन जानों कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारी आज़माइश (इम्तेहान) की चीज़ें हैं कि जो उनकी मोहब्बत में भी ख़ुदा को न भूले और वह दीनदार है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

1. **माल और औलाद की आज़माइश (Test of Wealth and Children): इस आयत में यह कहा गया है कि माल और औलाद इंसान के इम्तेहान का हिस्सा हैं, और इनसे इंसान का प्यार और मोहब्बत उसे ख़ुदा से भटकने नहीं देना चाहिए। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान का वास्तविकता (Prameya) के साथ मेल होना चाहिए। यहाँ पर यह दावा किया गया है कि माल और औलाद एक प्रकार से इम्तेहान हैं, लेकिन इसके पीछे कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है कि क्यों इन्हें आज़माइश का हिस्सा माना गया।**
2. **प्यार और भटकाव (Love and Deviation): आयत यह भी कहती है कि अगर इन चीज़ों के प्यार में इंसान ख़ुदा को भूलता है, तो वह गलती कर रहा है। इस स्थिति में, यह दावा किया जा रहा है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति और परिवार के प्रति प्रेम में ख़ुदा को भूल जाता है, तो वह गलत रास्ते पर चल रहा है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Prameya (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए तत्वों का कोई तर्कसंगत या प्रमाणिक आधार नहीं है कि ये सभी आज़माइश के रूप में काम करते हैं।

आयत 29 (सूरए अनफाल, 8:29)

अनुवाद: "और यक़ीनन ख़ुदा के हाँ बड़ी मज़दूरी है। ऐ ईमानदारों अगर तुम ख़ुदा से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे वास्ते इम्तियाज़ पैदा करे देगा और तुम्हारी तरफ से तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा क़रार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और ख़ुदा बड़ा साहब फज़ल (व करम) है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **सजा और क़फ्फ़ारा (Punishment and Atonement): इस आयत में यह कहा गया है कि अगर लोग ख़ुदा से डरते रहेंगे, तो उन्हें ख़ुदा की तरफ से एक विशेष इम्तियाज़ (अर्थात् ईश्वर की विशेष कृपा) प्राप्त होगी, और उनके गुनाहों का क़फ्फ़ारा किया जाएगा। Nyaya दर्शन में, Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) का सिद्धांत यह है कि किसी भी घटना का परिणाम हर बार एक जैसा होना चाहिए। इस आयत में यह कहा गया है कि हर बार अगर लोग ख़ुदा से डरते रहेंगे तो उन्हें विशेष वरदान मिलेगा, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया कि यह हर स्थिति में सत्य होगा।**
2. **बदला और पुरस्कार (Reward and Punishment): यहाँ पर यह दावा किया गया है कि ख़ुदा का कृपा और पुरस्कार केवल तब मिलेगा जब व्यक्ति उसका डर बनाए रखे। लेकिन, यह विचार हर परिस्थिति में लागू नहीं हो सकता, क्योंकि विभिन्न परिस्थितियाँ और कर्म अलग-अलग परिणाम उत्पन्न कर सकते हैं।**

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसके दावे में कोई सार्वभौमिकता या सभी परिस्थितियों में लागू होने वाली अनुलंबता नहीं दी गई है।

आयत 30 (सूरए अनफाल, 8:30)

अनुवाद: "और (ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब कुफ़्फ़ार तुम से फरेब कर रहे थे ताकि तुमको क़ैद कर लें या तुमको मार डाले तुम्हें (घर से) निकाल बाहर करे वह तो ये तद्बीर (चालाकी) कर रहे थे और ख़ुदा भी (उनके ख़िलाफ़) तद्बीर कर रहा था।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **दुश्मन की चालें और ख़ुदा की मदद (Enemy's Plans and God's Help): इस आयत में यह कहा गया है कि काफ़िरों ने नबी को नुकसान पहुँचाने के लिए कई योजनाएँ बनाई थीं, लेकिन ख़ुदा ने उनकी योजनाओं का प्रतिकार किया। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना के पीछे कारण (Hetu) का होना आवश्यक है। यहाँ पर यह कहा गया है कि काफ़िरों की चालों का प्रतिकार ख़ुदा की योजना के तहत हुआ, लेकिन इसका कोई विश्लेषण नहीं दिया गया कि यह प्रतिकार क्यों और कैसे हुआ।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई घटना का कोई तर्क या कारण स्पष्ट नहीं किया गया है।

सारांश:

इन आयतों में धार्मिक और नैतिक आदेश दिए गए हैं, लेकिन इनमें तर्क और प्रमाण की कमी है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे या आदेश के लिए ठोस तर्क और प्रमाण आवश्यक होते हैं, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 31-35 (सूरए अनफाल)

आयत 31 (सूरए अनफाल, 8:31)

अनुवाद: "और ख़ुदा तो सब तद्बीर करने वालों से बेहतर है और जब उनके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती हैं तो बोल उठते हैं कि हमने सुना तो लेकिन अगर हम चाहें तो यक़ीनन ऐसा ही (क़रार) हम भी कह सकते हैं-तो बस अगलों के क़िस्से हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **तद्बीर करने वालों से बेहतर (Better than the Planners): इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा सब तद्बीर करने वालों से बेहतर है, जो किसी योजना के अनुसार कार्य करते हैं। Nyaya दर्शन में, Hetu (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का कारण स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि ख़ुदा की योजना हर किसी की योजना से बेहतर है, लेकिन इस दावे का कोई तर्क या व्याख्या नहीं दी गई है।**

2. **आयतों का खंडन (Denial of Verses): आयत में यह कहा गया है कि काफ़िर लोग आयतों को सुनकर उन्हें खारिज कर देते हैं और उनका मज़ाक उड़ाते हैं। हालांकि यह एक प्रतिक्रियात्मक स्थिति को दर्शाता है, लेकिन इसमें यह समझाने का प्रयास नहीं किया गया कि काफ़िरों का इन आयतों के**

प्रति नकारात्मक रवैया क्यों है।

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ख़ुदा की योजना को बेहतर बताने का कोई ठोस कारण या तर्क नहीं दिया गया है, और काफ़िरों की प्रतिक्रिया को स्पष्ट रूप से नहीं समझाया गया।

आयत 32 (सूरए अनफाल, 8:32)

अनुवाद: "और (ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब उन काफिरों ने दुआएँ माँगीं थी कि ख़ुदा (वन्द) अगर ये (दीन इस्लाम) हक़ है और तेरे पास से (आया है) तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर कोई और दर्दनाक अज़ाब ही नाज़िल फरमा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

1. **दुआएं और चुनौती (Prayers and Challenge): इस आयत में काफ़िरों की दुआएं और चुनौती का उल्लेख किया गया है, जिसमें वे ख़ुदा से अज़ाब की मांग करते हैं। Nyaya दर्शन में Pramana (सत्य ज्ञान) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी दावे या प्रार्थना का प्रमाण होना चाहिए। इस आयत में काफ़िरों के द्वारा की गई दुआ को खारिज कर दिया गया, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि उनके द्वारा की गई चुनौती का ख़ुदा के ज्ञान या निर्णय से क्या संबंध है।**

2. **अज़ाब का दावा (Claim of Punishment): आयत में यह कहा गया है कि यदि इस्लाम सच्चा धर्म है, तो काफ़िरों पर आसमान से पत्थर बरसाए जाएं। हालांकि, यह चुनौती दिए गए कर्म के प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि एक शर्त पर आधारित है, जो ऐतिहासिक रूप से पूरा नहीं हुआ है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pramana (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट प्रमाण या आधार नहीं दिया गया है कि काफ़िरों के द्वारा दी गई चुनौती वास्तविक या प्रमाणिक थी।

आयत 33 (सूरए अनफाल, 8:33)

अनुवाद: "हालाँकि जब तक तुम उनके दरम्यिान मौजूद हो ख़ुदा उन पर अज़ाब नहीं करेगा और अल्लाह ऐसा भी नही कि लोग तो उससे अपने गुनाहो की माफी माँग रहे हैं और ख़ुदा उन पर नाज़िल फरमाए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण:

1. **अज़ाब का न आना (Punishment Not Coming)**: इस आयत में कहा गया है कि जब तक रसूल उन काफ़िरों के बीच में हैं, तब तक ख़ुदा अज़ाब नहीं भेजेगा। Nyaya दर्शन में **Vyapti** (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना का परिणाम हर समय समान होना चाहिए। यहाँ पर यह दावा किया गया है कि ख़ुदा ने अपने रसूल की उपस्थिति में अज़ाब को रोका, लेकिन यह दावा सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता। क्या यह केवल उस विशेष समय में था, या क्या यह हमेशा ऐसा होता है, इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।

2. **माफी और अज़ाब (Forgiveness and Punishment)**: आयत में यह भी कहा गया है कि जब लोग अपने गुनाहों से माफी माँगते हैं, तो ख़ुदा उन पर अज़ाब नहीं भेजेगा। यह सिद्धांत भी समय और परिस्थिति पर निर्भर करता है, जो इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होने देता।

निष्कर्ष:

यह आयत **Vyapti** (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए परिणामों की सार्वभौमिकता का कोई प्रमाण नहीं है।

आयत 34 (सूरए अनफाल, 8:34)

अनुवाद: "और जब ये लोग लोगों को मस्जिदुल हराम (ख़ान ए काबा की इबादत) से रोकते हैं तो फिर उनके लिए कौन सी बात बाक़ी है कि उन पर अज़ाब न नाज़िल करे और ये लोग तो ख़ानाए काबा के मुतवल्ली भी नहीं (फिर क्यों रोकते है) इसके मुतवल्ली तो सिर्फ परहेज़गार लोग हैं मगर इन काफ़िरों में से बहुतेरे नहीं जानते।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**

विश्लेषण:

1. **मस्जिदुल हराम से रोकने का आरोप (Accusation of Stopping from Masjid-ul-Haram): इस आयत में काफ़िरों को मस्जिदुल हराम से रोकने का आरोप लगाया गया है, और फिर कहा गया कि ऐसे काफ़िरों पर अज़ाब आना चाहिए। Nyaya दर्शन में, Hetu (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना के पीछे स्पष्ट कारण होना चाहिए। यहाँ पर यह कहा गया है कि काफ़िरों द्वारा मुसलमानों को मस्जिदुल हराम से रोकने की वजह से उन पर अज़ाब आना चाहिए, लेकिन इसका कोई ठोस तर्क या कारण नहीं दिया गया है कि क्यों इस कारण से अज़ाब आना चाहिए।**

2. **काफ़िरों का ज्ञान (Knowledge of Kafirs): यह भी कहा गया है कि काफ़िरों में से बहुतेरे नहीं जानते कि ख़ानए काबा के मुतवल्ली सिर्फ परहेज़गार लोग हैं। यह विचार भी अपने आप में काफ़िरों के ज्ञान और उनके कर्मों को सही या गलत साबित करने का प्रयास करता है, लेकिन इसका कोई मजबूत तर्क नहीं दिया गया है कि उनके कर्म गलत क्यों हैं।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें स्पष्ट कारण और तर्क का अभाव है कि क्यों काफ़िरों पर अज़ाब आना चाहिए।

आयत 35 (सूरए अनफाल, 8:35)

अनुवाद: "और ख़ानाए काबे के पास सीटियाँ तालिया बजाने के सिवा उनकी नमाज ही क्या थी तो (ऐ काफिरों) जब तुम कुफ्र किया करते थे उसकी सज़ा में (पड़े) अज़ाब के मज़े चखो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

1. **कुफ्र और अज़ाब (Unbelief and Punishment): इस आयत में यह कहा गया है कि जब काफ़िर लोग कुफ्र (अविश्वास) करते थे, तो उन्हें अज़ाब मिलेगा। Nyaya दर्शन के अनुसार, Prameya (ज्ञान का वस्तु) का स्पष्टता के साथ परिभाषित होना चाहिए। इस आयत में काफ़िरों के कुफ्र को दोषी ठहराया गया, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि क्यों केवल कुफ्र करने पर अज़ाब आना चाहिए, और इसका कोई प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।**

2. **सीटियाँ तालियाँ और नमाज (Whistling and Prayer): आयत में काफ़िरों की नमाज को नकारते हुए सीटियाँ और तालियाँ बजाने का आरोप लगाया गया है। यह आरोप काफ़िरों के धार्मिक आस्थाओं और कर्मों को खारिज करता है, लेकिन इसका कोई व्यावहारिक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Prameya (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए दृष्टिकोण और आरोपों का कोई प्रमाणिक आधार नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में दावे और आरोप लगाए गए हैं, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, इन दावों और आरोपों का समर्थन करने के लिए कोई तर्क, प्रमाण, या सिद्धांत नहीं दिया गया है।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 36-40 (सूरए अनफाल)

आयत 36 (सूरए अनफाल, 8:36)

अनुवाद: "इसमें शक नहीं कि ये कुफ्फार अपने माल महज़ इस वास्ते खर्च करेंगें फिर उसके बाद उनकी हसरत का बाइस होगा फिर आख़िर ये लोग हार जाएँगें और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया (क़यामत में) सब के सब जहन्नुम की तरफ हाके जाएँगें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **कुफ्र और नुकसान (Unbelief and Loss): इस आयत में कहा गया है कि कुफ्र करने वाले लोग अंत में हार जाएंगे और क़यामत में जहन्नुम में डाल दिए जाएंगे। Nyaya दर्शन के अनुसार, Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी घटना के परिणाम हर समय समान होने चाहिए। यह आयत दावा करती है कि कुफ्र करने वालों के लिए परिणाम हमेशा एक जैसा होगा, लेकिन इस सिद्धांत के अनुसार यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता, क्योंकि किसी भी**

व्यक्ति की अंतिम स्थिति और निर्णय विभिन्न कारणों से अलग हो सकते हैं।

2. **माल खर्च करना और हसरत (Spending Wealth and Regret)**: आयत में यह भी कहा गया है कि कुफ़्र करने वाले लोग अपनी संपत्ति खर्च करेंगे, लेकिन अंत में उन्हें हार का सामना करना पड़ेगा। यह भी एक अनुमान है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह संपत्ति खर्च करने से केवल नुकसान होगा।

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दावा किया गया परिणाम हर समय समान नहीं हो सकता।

आयत 37 (सूरए अनफाल, 8:37)

अनुवाद: "ताकि ख़ुदा पाक को नापाक से जुदा कर दे और नापाक लोगों को एक दूसरे पर रखके ढेर बनाए फिर सब को जहन्नुम में झोंक दे यही लोग घाटा उठाने वाले हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **नापाक और पाक का भेद (Distinction between Pure and Impure)**: इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा पाक को नापाक से जुदा कर देगा और नापाक लोगों को जहन्नुम में डालेगा। Nyaya दर्शन में Hetu (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का कारण स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि ख़ुदा का उद्देश्य नापाक और पाक को अलग करना है, लेकिन इसका कोई ठोस कारण या तर्क नहीं दिया गया है कि क्यों नापाक लोगों को सज़ा दी जाएगी और उन्हें जहन्नुम में डाला जाएगा।

2. **घाटा उठाना (Loss)**: आयत में यह भी कहा गया है कि नापाक लोग घाटा उठाएंगे, लेकिन इसका कोई स्पष्ट कारण या व्याख्या नहीं दी गई है कि क्यों ये लोग घाटा उठाएंगे।

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कार्रवाई के स्पष्ट कारण का अभाव है।

आयत 38 (सूरए अनफाल, 8:38)

अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम काफिरों से कह दो कि अगर वह लोग (अब भी अपनी शरारत से) बाज़ रहें तो उनके पिछले कुसूर माफ कर दिए जाए और अगर फिर कहीं पलटें तो यक़ीनन अगलों के तरीक़े गुज़र चुके जो, उनकी सज़ा हुयी वही इनकी भी होगी।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Prameya (Object of Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **शरारत और माफी (Mischief and Forgiveness): इस आयत में यह कहा गया है कि अगर काफ़िर अपनी शरारत से बाज़ आ जाएं, तो उनके पिछले पाप माफ़ कर दिए जाएंगे। Nyaya दर्शन में Prameya (ज्ञान का वस्तु) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी भी वस्तु या घटना का ज्ञान स्पष्ट और प्रमाणिक होना चाहिए। इस आयत में कहा गया है कि काफ़िरों को माफ़ किया जा सकता है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि क्यों केवल शरारत से बाज़ आ जाने से माफी दी जाएगी।**
2. **सज़ा का अनुसरण (Punishment Following the Past): यह भी कहा गया है कि अगर काफ़िर फिर से पलटते हैं, तो उन्हें अगलों की तरह सज़ा मिलेगी। इस परिपेक्ष्य में कोई प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है कि काफ़िरों की सज़ा में यह पद्धति हमेशा लागू होगी।**

निष्कर्ष:

यह आयत Prameya (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए विचारों और सज़ाओं का कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 39 (सूरए अनफाल, 8:39)

अनुवादः "मुसलमानों काफ़िरों से लड़े जाओ यहाँ तक कि कोई फसाद (बाक़ी) न रहे और (बिल्कुल सारी ख़ुदाई में) ख़ुदा की दीन ही दीन हो जाए फिर अगर ये लोग (फ़साद से) न बाज़ आए तो ख़ुदा उनकी कारवाइयों को ख़ूब देखता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण:

1. **लड़ाई और फसाद (Fighting and Corruption): इस आयत में यह कहा गया है कि मुसलमानों को काफ़िरों से तब तक लड़ा जाए जब तक कि कोई फसाद (अराजकता) न रहे। Nyaya दर्शन के Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) सिद्धांत के अनुसार, एक निश्चित स्थिति में घटनाओं का परिणाम समान होना चाहिए। इस आयत में कहा गया है कि मुसलमानों को काफ़िरों से लड़ने की अनुमति दी जाएगी, लेकिन यह कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं देता कि सभी काफ़िरों के साथ ऐसा ही व्यवहार होना चाहिए, या क्या यह कार्रवाई हर समय सही और अपरिवर्तनीय होगी।**
2. **ख़ुदा का देखना (God's Observation): इसमें यह भी कहा गया है कि यदि काफ़िर फसाद से बाज़ नहीं आते, तो ख़ुदा उनकी हर गतिविधि को देखेगा। यह दावा सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता, क्योंकि हर स्थिति में ख़ुदा का कृत्य अलग हो सकता है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें उल्लिखित घटनाओं के परिणाम सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकते।

आयत 40 (सूरए अनफाल, 8:40)

अनुवादः "और अगर सरताबी करें तो (मुसलमानों) समझ लो कि ख़ुदा यक़ीनी तुम्हारा मालिक है और वह क्या अच्छा मालिक है और क्या अच्छा मददगार है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **ख़ुदा का मालिक होना (God as Master): इस आयत में कहा गया है कि अगर काफ़िरों ने सरताबी की, तो मुसलमानों को यह समझना चाहिए कि ख़ुदा उनका मालिक है और मददगार है। Nyaya दर्शन में Pramana (सत्य ज्ञान) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी दावे या सत्य का प्रमाण होना चाहिए। इस आयत में दावा किया गया है कि ख़ुदा मुसलमानों का मालिक और मददगार है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या व्याख्या नहीं दी गई है कि क्यों या कैसे यह सच्चाई है।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pramana (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें प्रमाण का कोई ठोस आधार नहीं दिया गया है।

सारांश:

इन आयतों में विभिन्न दावे किए गए हैं, लेकिन Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इनमें कोई ठोस तर्क, प्रमाण, या सार्वभौमिक अनुलंबता नहीं दी गई है। इन आयतों में प्रस्तुत घटनाएँ और परिणाम सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकते।

आयतों का तार्किक और दार्शनिक विश्लेषण: आयत 41-45 (सूरए अनफाल)

आयत 41 (सूरए अनफाल, 8:41)

अनुवाद: "और जान लो कि जो कुछ तुम (माल लड़कर) लूटो तो उनमें का पाचवां हिस्सा मख़सूस ख़ुदा और रसूल और (रसूल के) क़राबतदारों और यतीमों और मिस्कीनों और परदेसियों का है। अगर तुम ख़ुदा पर और उस (ग़ैबी इमदाद) पर ईमान ला चुके हो जो हमने ख़ास बन्दे (मोहम्मद) पर फ़ैसले के दिन (जंग बदर में) नाज़िल की थी जिस दिन (मुसलमानों और काफिरों की) दो जमाअतें बाहम गुथ गयी थी और ख़ुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**

विश्लेषण:

1. **लूट का वितरण (Distribution of Spoils): इस आयत में लूट के माल के एक हिस्से का वितरण ख़ुदा, रसूल, उनके क़राबतदारों, यतीमों, मिस्कीनों और परदेसियों के लिए किया गया है। Nyaya**

दर्शन में **Pramana** (सत्य ज्ञान) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी भी जानकारी का प्रमाण और सत्यता सुनिश्चित होनी चाहिए। इस आयत में लूट के माल का वितरण धार्मिक आदेश पर आधारित है, लेकिन इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया कि यह वितरण सार्वभौमिक रूप से उचित है।

2. **ईमान और ग़ैबी इमदाद (Faith and Divine Assistance)**: यह आयत ख़ुदा पर ईमान और ग़ैबी इमदाद (अदृश्य सहायता) की बात करती है, लेकिन यह समझाने की कोशिश नहीं की गई है कि ग़ैबी इमदाद का सिद्धांत वास्तव में क्या है और इसे कैसे परखा जा सकता है।

निष्कर्ष:

यह आयत **Pramana** (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए विचारों और आदेशों का कोई स्पष्ट तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 42 (सूरए अनफाल, 8:42)

अनुवाद: "(यह वह वक़्त था) जब तुम (मैदाने जंग में मदीने के) क़रीब नाके पर थे और वह कुफ़्फ़ार बईद (दूर के) के नाके पर और (काफ़िलों के) सवार तुम से नषेब में थे और अगर तुम एक दूसरे से (वक़्त की तक़रीर का) वायदा कर लेते हो तो और वक़्त पर गड़बड़ कर देते मगर ख़ुदा ने अचानक तुम लोगों को इकट्ठा कर दिया ताकि जो बात सदनी (होनी) थी वह पूरी कर दिखाए ताकि जो शख़्स हलाक (गुमराह) हो वह (हक़ की) हुज्जत तमाम होने के बाद हलाक हो और जो ज़िन्दा रहे वह हिदायत की हुज्जत तमाम होने के बाद ज़िन्दा रहे और ख़ुदा यक़ीनी सुनने वाला ख़बरदार है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**

विश्लेषण:

1. **ख़ुदा की योजना और मनुष्य का निर्णय (God's Plan and Human Decision)**: आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने मुसलमानों को एकत्र किया ताकि वह अपनी योजना को पूरा कर सकें और जो लोग गलत रास्ते पर हैं, उन्हें समझा सके। Nyaya दर्शन में **Hetu** (कारण) का सिद्धांत कहता है कि किसी कार्रवाई का स्पष्ट कारण होना चाहिए। यहाँ पर कहा गया है कि मुसलमानों की एकजुटता ख़ुदा की योजना का हिस्सा थी, लेकिन इसका कोई ठोस कारण नहीं दिया गया कि यह कार्यवाही

क्यों और कैसे हुई।

2. **हक़ और हिदायत (Truth and Guidance): आयत का यह हिस्सा कहता है कि हक़ की पूरी हुज्जत होने के बाद जो व्यक्ति गुमराह है, वह हलाक होगा और जो सही रास्ते पर रहेगा, वह बच जाएगा। यह विचार Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह केवल एक अनुमान है और इसका कोई व्यावहारिक प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह कैसे काम करेगा।**

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कार्यवाही के कारण का स्पष्ट व्याख्यान नहीं है।

आयत 43 (सूरए अनफाल, 8:43)

अनुवाद: "(यह वह वक़्त था) जब ख़ुदा ने तुम्हें ख़्वाब में कुफ़्फ़ार को कम करके दिखलाया था और अगर उनको तुम्हें ज़्यादा करते दिखलाता तुम यक़ीनन हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में झगड़ने लगते मगर ख़ुदा ने इसे (बदनामी) से बचाया इसमें तो शक ही नहीं कि वह दिली ख़्यालात से वाक़िफ़ है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pratyaksha (Perception)

विश्लेषण:

1. **ख्वाब और वास्तविकता (Dream and Reality): इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने मुसलमानों को ख़्वाब में काफ़िरों को कम करके दिखाया। Nyaya दर्शन में Pratyaksha (साक्षात्कार या प्रत्यक्ष ज्ञान) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी चीज़ के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए उसे प्रत्यक्ष रूप से देखा जाना चाहिए। यहां पर ख़्वाब के माध्यम से वास्तविकता को दिखाया गया है, लेकिन इसे एक प्रमाणिक या विश्वसनीय ज्ञान के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं है, क्योंकि ख्वाब केवल एक मानसिक अवस्था है और यह वास्तविकता का प्रतिनिधित्व नहीं करता।**

निष्कर्ष:

यह आयत Pratyaksha (साक्षात्कार) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि ख्वाब को प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।

आयत 44 (सूरए अनफाल, 8:44)

अनुवाद: "(यह वह वक़्त था) जब तुम लोगों ने मुठभेड़ की तो ख़ुदा ने तुम्हारी आँखों में कुफ़्फ़ार को बहुत कम करके दिखलाया और उनकी आँखों में तुमको थोड़ा कर दिया ताकि ख़ुदा को जो कुछ करना मंज़ूर था वह पूरा हो जाए और कुल बातों का दारोमदार तो ख़ुदा ही पर है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण:

1. **दृष्टि में अंतर (Difference in Perception)**: इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने काफ़िरों को मुसलमानों से कम दिखलाया और मुसलमानों को काफ़िरों से कम दिखलाया। Nyaya दर्शन में **Vyapti** (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) का सिद्धांत कहता है कि किसी भी घटना का परिणाम प्रत्येक स्थिति में समान होना चाहिए। यहां पर इस कथन में कोई स्पष्ट अपवाद या सांस्कृतिक प्रमाण नहीं है कि यह भेदभाव क्यों और कैसे हुआ।

निष्कर्ष:

यह आयत **Vyapti** (अपरिवर्तनीय अनुलंबता) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें एक ही घटना के परिणाम अलग-अलग व्यक्तियों के लिए अलग तरीके से दिए गए हैं।

आयत 45 (सूरए अनफाल, 8:45)

अनुवाद: "ऐ इमानदारों जब तुम किसी फौज से मुठभेड़ करो तो ख़बरदार अपने क़दम जमाए रहो और ख़ुदा को बहुंत याद करते रहो ताकि तुम फलाह पाओ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Upamana (Comparison)**

विश्लेषण:

1. **दृष्टि और उद्देश्य (Perception and Objective)**: आयत में मुसलमानों को मुठभेड़ के समय अपने कदम जमाए रखने और ख़ुदा को याद करने का निर्देश दिया गया है। Nyaya दर्शन में **Upamana** (उपमान या तुलना) का सिद्धांत कहता है कि किसी चीज़ की तुलना किसी अन्य वस्तु से करनी

चाहिए ताकि उसे समझा जा सके। यहां पर इस आयत का कोई स्पष्ट उपमान नहीं है, क्योंकि यह एक सामान्य निर्देश है बिना किसी तुलना या उदाहरण के।

निष्कर्ष:

यह आयत Upamana (उपमान) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई उपमान या उदाहरण नहीं दिया गया है जिससे इसकी व्याख्या की जा सके।

सारांश:

इन आयतों में विभिन्न दावे किए गए हैं, लेकिन Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इनमें कोई ठोस तर्क, प्रमाण, या सार्वभौमिक अनुलंबता नहीं दी गई है। इन आयतों में प्रस्तुत घटनाएँ और परिणाम सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकते।

विश्लेषण (Ayat 41-50)

1. आयत 41:

"और जान लो कि जो कुछ तुम (माल लड़कर) लूटो तो उनमें का पाचवां हिस्सा मख़सूस ख़ुदा और रसूल और (रसूल के) क़राबतदारों और यतीमों और मिस्कीनों और परदेसियों का है..."

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
  - इस आयत में युद्ध के दौरान प्राप्त संपत्ति में एक हिस्से का वितरण निर्धारित किया गया है। यह विशेष रूप से एक धार्मिक आदेश पर आधारित है।
  - तार्किक दृष्टि से यह प्रश्न उठता है: क्या किसी युद्ध के दौरान प्राप्त संपत्ति को धर्म और आस्थाओं के आधार पर विभाजित करना, मानवता की सार्वभौमिकता और न्याय की अवधारणा से मेल खाता है? क्या यह अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं के साथ सहमत है?

2. आयत 42:

"जब तुम (मैदाने जंग में मदीने के) क़रीब नाके पर थे और वह कुफ़्फ़ार बईद (दूर के) के नाके पर थे..."

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:

- ○ इस आयत में जंग के दौरान विभिन्न पक्षों के बीच भौतिक दूरी और रणनीतिक स्थिति को बताया गया है। यह एक ऐतिहासिक संदर्भ को दर्शाता है।
- ○ क्या यह आयत केवल ऐतिहासिक परिस्थितियों पर आधारित है, या क्या इसे सार्वभौमिक रूप से लागू किया जा सकता है? क्या ऐसे युद्ध और संघर्ष मानवता के लिए सही दिशा में हैं?

3. आयत 43:

"जब ख़ुदा ने तुम्हें ख़्वाब में कुफ़्फ़ार को कम करके दिखलाया था..."

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
  - ○ इस आयत में दिखाए गए स्वप्न का उल्लेख है। क्या यह स्वप्न से जुड़ा संदेश एक वैध और प्रमाणिक स्रोत माना जा सकता है? क्या इसका मानवता पर वास्तविक प्रभाव पड़ता है या यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है?

4. आयत 44:

"जब तुम लोगों ने मुठभेड़ की तो ख़ुदा ने तुम्हारी आँखों में कुफ़्फ़ार को बहुत कम करके दिखलाया..."

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
  - ○ यह आयत दर्शाती है कि भगवान ने मुसलमानों के दृष्टिकोण में काफिरों को कम कर दिया था। यह घटना किसी प्रकार के मानसिक या मनोवैज्ञानिक प्रभाव की तरह प्रस्तुत की गई है।
  - ○ क्या यह दृष्टिकोण मानवता की युद्ध के दौरान रणनीतिक सोच और समझ से मेल खाता है?

5. आयत 45:

"ऐ इमानदारों जब तुम किसी फौज से मुठभेड़ करो तो ख़बरदार अपने क़दम जमाए रहो..."

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
  - ○ इस आयत में युद्ध के दौरान धैर्य और संयम रखने की बात कही गई है। क्या यह निर्देश किसी युद्ध के दौरान सही तरीके से व्यवहार करने की ओर संकेत करता है? क्या यह मानवता की शांति और न्याय की अवधारणा से मेल खाता है?

6. आयत 46:

"और ख़ुदा की और उसके रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो…"

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
    - यह आयत विवाद और असहमति से बचने का निर्देश देती है। क्या यह दृष्टिकोण विश्वसनीय है और क्या यह सभी मानवता के लिए उपयुक्त है? क्या यह व्यापक शांति और सुलह को बढ़ावा देता है?

7. आयत 47:

"और उन लोगों के ऐसे न हो जाओ जो इतराते हुए और लोगों के दिखलाने के वास्ते अपने घरों से निकल खड़े हुए…"

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
    - यह आयत किसी के दंभ या दिखावे को नकारती है, जो दूसरों को प्रभावित करने के लिए किया जाता है। क्या यह दृष्टिकोण हमारे व्यक्तिगत जीवन में सही है और क्या यह समाज में सच्चाई और ईमानदारी को बढ़ावा देता है?

8. आयत 48:

"जब शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा कर दिखाया और उनके कान में फूंक दिया…"

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
    - इस आयत में शैतान के प्रभाव का उल्लेख है। क्या इस प्रकार के दृष्टिकोण को पूरी तरह से सच माना जा सकता है? क्या यह तर्क और प्रमाण के आधार पर खड़ा होता है, या केवल विश्वास और धर्म पर आधारित है?

9. आयत 49:

"मुनाफ़िक़ीन और जिन लोगों के दिल में (कुफ्र का) मजऱ् है कह रहे थे कि उन मुसलमानों को उनके दीन ने धोके में डाल रखा है…"

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
    - यह आयत मुनाफ़िक़ीन और उनके विचारों को दर्शाती है। क्या यह दृष्टिकोण केवल विश्वास पर आधारित है, या क्या इसके लिए कोई मजबूत तर्क है जो इसके सत्यापन को संभव बनाता है?

10. आयत 50:

"और काश (ऐ रसूल) तुम देखते जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकाल लेते थे..."

- **तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण**:
    - **यह आयत एक दिव्य दृश्य का वर्णन करती है जिसमें फरिश्तों द्वारा काफिरों का विनाश होता है। क्या यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक या तार्किक आधार पर समझाया जा सकता है, या यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण है?**

निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है, जो युद्ध, विश्वास और ईश्वर के आदेशों के आधार पर आधारित हैं। हालांकि, इन आयतों में दी गई शिक्षाओं को वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से चुनौती दी जा सकती है। कई स्थानों पर इन आयतों में मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों और शांति के सिद्धांतों का उल्लंघन प्रतीत होता है। यदि इन्हें धर्मनिरपेक्ष और मानवता के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यह अवधारणाएँ वैश्विक मान्यताओं और न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ हो सकती हैं।

आयत 51 (सूरए आराफ़, 7:51)
अनुवाद: "ये सज़ा उसकी है जो तुम्हारे हाथों ने पहले किया कराया है और ख़ुदा बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म नहीं किया करता है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि यह सज़ा उन कार्यों का परिणाम है जो लोगों ने पहले किए थे, लेकिन इसका कोई स्पष्ट तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी दंड या सज़ा को तर्कसंगत कारण के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो यहाँ नहीं किया गया है। यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है कि जो कुछ हुआ है, वह पिछले कार्यों का परिणाम है, लेकिन इसका वैज्ञानिक या प्रमाणित आधार मौजूद नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें दंड के कारण का कोई स्पष्ट और तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 52 (सूरए आराफ़, 7:52)
अनुवाद: "उन लोगों की हालत क़ौमे फिरआऊन और उनके लोगों की सी है जो उन से पहले थे और ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते थे तो ख़ुदा ने भी उनके गुनाहों की वजह से उन्हें ले डाला बेषक ख़ुदा ज़बरदस्त और बहुत सख़्त अज़ाब देने वाला है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
इस आयत में "आयतों से इन्कार" करने के कारण सज़ा का वर्णन किया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी ज्ञान या दावे को प्रमाणित किया जाना चाहिए। लेकिन इस आयत में जो कहा गया है, वह केवल विश्वास पर आधारित है। यह आयत बिना किसी प्रमाण के यह दावा करती है कि केवल इन्कार करने के कारण लोग सज़ा के पात्र बनते हैं, जबकि Nyaya दर्शन में किसी भी न्यायिक या आध्यात्मिक फैसले को प्रमाणित और तर्कसंगत तरीके से प्रस्तुत करना आवश्यक होता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दावे का प्रमाण या सत्य ज्ञान का अभाव है।

आयत 53 (सूरए आराफ़, 7:53)
अनुवाद: "ये सज़ा इस वजह से (दी गई) कि जब कोई नेअमत ख़ुदा किसी क़ौम को देता है तो जब तक कि वह लोग ख़ुद अपनी कलबी हालत (न) बदलें ख़ुदा भी उसे नहीं बदलेगा और ख़ुदा तो यक़ीनी (सब की सुनता) और सब कुछ जानता है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि जब कोई नेअमत (वरदान) दी जाती है, तो केवल उस क़ौम की हालत बदलने पर ही वह बदलती है। Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत में, हर घटना का कोई तात्त्विक कारण होना चाहिए, लेकिन इस आयत में इसका कोई स्पष्ट और तर्कसंगत कारण नहीं दिया गया है। यह आयत केवल एक सामान्य विश्वास पर आधारित है कि कलबी हालत बदलने से वरदान बदल जाएगा, लेकिन इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दंड और वरदान के बदलाव का कोई प्रमाणित और तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 54 (सूरए आराफ़, 7:54)
 अनुवादः "उन लोगों की हालत क़ौम फिरआऊन और उन लोगों की सी है जो उनसे पहले थे और अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाते थे तो हमने भी उनके गुनाहों की वजह से उनको हलाक़ कर डाला और फिरआऊन की क़ौम को डुबा मारा और (ये) सब के सब ज़ालिम थे।"
 आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
 यह आयत इस बात का दावा करती है कि किसी क़ौम द्वारा परवरदिगार की आयतों को झुठलाने के कारण उनका विनाश हुआ। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, हर घटना का एक स्पष्ट और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए, लेकिन इस आयत में इसका कोई विशिष्ट और प्रमाणित परिणाम नहीं दिया गया है। यह आयत केवल एक सामान्य कथन करती है कि ग़लत कार्यों के कारण विनाश हुआ, लेकिन यह नहीं बताती कि झुठलाने से ही विनाश अवश्य होता है।

निष्कर्ष:
 यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी भी घटना के परिणाम के लिए कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं बताया गया है।

आयत 55 (सूरए आराफ़, 7:55)
 अनुवादः "इसमें शक नहीं कि ख़ुदा के नज़दीक जानवरों में कुफ़्फ़ार सबसे बदतरीन तो (बावजूद इसके) फिर ईमान नहीं लाते।"
 आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
 इस आयत में यह कहा गया है कि काफ़िरों का स्तर जानवरों से भी खराब है। Nyaya दर्शन में "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी वस्तु या स्थिति का ज्ञान प्रमाणित और तात्त्विक होना चाहिए, लेकिन इस आयत में यह दावा किया गया है कि काफ़िरों का स्तर जानवरों से भी नीचा है, जबकि इसका कोई प्रमाणित आधार नहीं है। यह विचार केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और किसी प्रकार के तात्त्विक ज्ञान या प्रमाण से रहित है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या तात्त्विक ज्ञान का अभाव है।

सारांश:
इन आयतों में जो दंड, पुरस्कार और आध्यात्मिक आदेश दिए गए हैं, वे तर्कसंगत दृष्टिकोण से प्रमाणित और आधारहीन हैं। इन आयतों में किसी भी निषेध, दंड, या आध्यात्मिक आदेश का कोई ठोस प्रमाण या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है, जिससे वे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन आयतों को वैज्ञानिक, तार्किक और प्रमाणित दृष्टिकोण से देखा जाए तो इनका कोई सुसंगत आधार नहीं मिलता।

आयत 56 (सूरए अन्फाल, 8:56)
अनुवाद: "रसूल जिन लोगों से तुम ने एहद व पैमान किया था फिर वह लोग अपने एहद को हर बार तोड़ डालते है और (फिर ख़ुदा से) नहीं डरते।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि यदि लोग बार-बार अपने एहतियात को तोड़ते हैं और ईश्वर से नहीं डरते, तो उन्हें दंडित किया जाए। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी कार्रवाई का एक तात्त्विक और ठोस कारण होना चाहिए, लेकिन इस आयत में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि उस दंड का वास्तविक और तात्त्विक कारण क्या है। यह केवल एक सामान्य विश्वास है कि लोग ईश्वर से नहीं डरते, इसलिए उन्हें दंडित किया जाना चाहिए। इसमें कोई ठोस प्रमाण या व्याख्या नहीं दी गई है कि क्यों उन लोगों को सज़ा दी जानी चाहिए।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें दंड का कोई स्पष्ट तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 57 (सूरए अन्फाल, 8:57)
अनुवाद: "तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हाथे चढ़ जाएँ तो (ऐसी सख़्त गोशमाली दो कि) उनके साथ साथ उन लोगों का तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हत्थे चढ़ जाएं तो (ऐसी सजा दो की) उनके साथ उन लोगों को भी

तितिर बितिर कर दो जो उन के पुश्त पर हो ताकि ये इबरत हासिल करें।"
आधारित तत्व **(Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि यदि दुश्मन युद्ध में हार जाए, तो उन्हें इस कदर सजा दी जाए कि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए इबरत बन जाएं। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) सिद्धांत के अनुसार, युद्ध की हार का परिणाम केवल और केवल सजा नहीं होना चाहिए, बल्कि सजा का अनिवार्य कारण और परिणाम होना चाहिए। आयत में यह कोई स्पष्ट "Vyapti" संबंध नहीं प्रस्तुत करती कि क्यों हर हार का परिणाम अत्यधिक और निरंतर सजा होनी चाहिए, जिससे इस विचार की तार्किकता पर सवाल उठता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि सजा और हार के परिणाम के बीच कोई अनिवार्य संबंध स्थापित नहीं किया गया है।

आयत 58 (सूरए अन्फाल, 8:58)
अनुवाद: "और अगर तुम्हें किसी क़ौम की ख़्यानत (एहद शिकनी) का ख़ौफ हो तो तुम भी बराबर उनका एहद उन्हीं की तरफ से फेंकी मारो (एहद शिकनी के साथ एहद शिकनी करो) ख़ुदा हरगिज़ दग़ाबाजों को दोस्त नहीं रखता।"
आधारित तत्व **(Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)**

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि यदि किसी क़ौम से विश्वासघात का डर हो, तो उन्हीं के खिलाफ विश्वासघात किया जाए। Nyaya दर्शन में "Pramana" (प्रमाण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी आस्थावान क्रिया का प्रमाण होना चाहिए। आयत में यह बताया गया है कि यदि हमें विश्वासघात का डर हो, तो हम भी उसी तरह से जवाब दें। लेकिन यह विचार केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित है और इसका कोई ठोस और प्रमाणित तात्त्विक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 59 (सूरए अन्फाल, 8:59)
अनुवाद: "और कुफ़्फ़ार ये न ख़्याल करें कि वह (मुसलमानों से) आगे बढ़ निकले (क्योंकि) वह हरगिज़ (मुसलमानों को) हरा नहीं सकते।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि काफ़िर कभी भी मुसलमानों को हर नहीं सकते। Nyaya दर्शन के "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा कि काफ़िर मुसलमानों को हरा नहीं सकते, यह केवल एक सामान्य विचार है, लेकिन यह प्रमाणित और तात्त्विक आधार पर आधारित नहीं है। हर युद्ध और संघर्ष में कई कारक होते हैं और यह दावा कि काफ़िरों के पास कोई भी मौका नहीं है, यह व्यावहारिक और तात्त्विक रूप से संदिग्ध है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें हर स्थिति में काफ़िरों को पराजित होने की अवधारणा प्रस्तुत की गई है, जो एक अनिवार्य संबंध स्थापित नहीं करता।

आयत 60 (सूरए अन्फाल, 8:60)
अनुवाद: "और (मुसलमानों तुम कुफ्फार के मुकाबले के) वास्ते जहाँ तक तुमसे हो सके (अपने बाज़ू के) ज़ोर से और बॅधे हुए घोड़े से लड़ाई का सामान मुहय्या करो इससे ख़ुदा के दुष्मन और अपने दुश्मन और उसके सिवा दूसरे लोगों पर भी अपनी धाक बढ़ा लेगें जिन्हें तुम नहीं जानते हो मगर ख़ुदा तो उनको जानता है और ख़ुदा की राह में तुम जो कुछ भी ख़र्च करोगे वह तुम पूरा पूरा भर पाओगें और तुम पर किसी तरह ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत यह कहती है कि मुसलमानों को अपने दुश्मनों से मुकाबला करने के लिए हर संभव उपायों का सहारा लेना चाहिए और जो भी वे खर्च करेंगे, वह उन्हें पूरा मिलेगा। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी खर्च और प्रयास का तात्त्विक कारण होना चाहिए। लेकिन इस आयत में यह केवल एक आदर्श है कि जो खर्च किया जाएगा, वह जरूर पूरा मिलेगा, लेकिन इसमें कोई तात्त्विक और तर्कसंगत आधार नहीं दिया गया है। इस कथन में विश्वास पर आधारित परिणाम की पेशकश की गई है, जिसमें कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें खर्च और प्राप्ति के बीच कोई तात्त्विक और प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

सारांश:
इन आयतों में जिन विचारों और निर्देशों का उल्लेख किया गया है, वे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में दंड, युद्ध, और विश्वासघात के लिए कोई ठोस तात्त्विक कारण या प्रमाणित आधार नहीं दिया गया है। इन निर्देशों को देखा जाए तो ये केवल विश्वासों और भावनाओं पर आधारित हैं, जबकि Nyaya दर्शन में हर कार्रवाई का प्रमाणित और तात्त्विक कारण आवश्यक होता है।

आयत 61 (सूरए अन्फाल, 8:61)
अनुवाद: "और अगर ये कुफ्फ़ार सुलह की तरफ माएल हो तो तुम भी उसकी तरफ माएल हो और ख़ुदा पर भरोसा रखो (क्योंकि) वह बेशक (सब कुछ) सुनता जानता है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि अगर काफ़िर सुलह की ओर रुख करते हैं तो मुसलमानों को भी उसी दिशा में बढ़ना चाहिए, और इसका कारण यह है कि अल्लाह सब कुछ जानता है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी कार्य का स्पष्ट और प्रमाणित कारण होना चाहिए। यहां पर केवल अल्लाह के ज्ञान का हवाला दिया गया है, लेकिन इसका कोई स्पष्ट तार्किक आधार या व्यावहारिक कारण नहीं प्रस्तुत किया गया कि सुलह की तरफ बढ़ना क्यों जरूरी है। यह पूरी तरह से विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें सुलह के निर्णय का कोई तार्किक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है, बल्कि यह केवल अल्लाह के ज्ञान पर निर्भर है।

आयत 62 (सूरए अन्फाल, 8:62)
अनुवाद: "और अगर वह लोग तुम्हें फरेब देना चाहे तो (कुछ परवा नहीं) ख़ुदा तुम्हारे वास्ते यक़ीनी काफी है- (ऐ रसूल) वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने अपनी ख़ास मदद और मोमिनीन से तुम्हारी ताईद की।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि अगर काफ़िर मुसलमानों को धोखा देने का प्रयास करें, तो अल्लाह मुसलमानों की मदद के लिए पर्याप्त है। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, अगर काफ़िर धोखा देना चाहते हैं, तो इसके बदले मुसलमानों को तत्काल मदद प्राप्त होने की स्थिति होनी चाहिए। हालांकि, यहां पर यह दावा किया गया है कि अल्लाह मुसलमानों की मदद करेगा, लेकिन इस बात का कोई व्यावहारिक या अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है कि धोखा देने की स्थिति में अल्लाह की मदद की निश्चितता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें धोखे और मदद के बीच कोई अनिवार्य और प्रमाणित संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 63 (सूरए अन्फाल, 8:63)
अनुवाद: "और उसी ने उन मुसलमानों के दिलों में बाहम ऐसी उल्फत पैदा कर दी कि अगर तुम जो कुछ ज़मीन में है सब का सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलो में ऐसी उल्फत पैदा न कर सकते मगर ख़ुदा ही था जिसने बाहम उलफत पैदा की बेशक वह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि केवल अल्लाह ही मुसलमानों के दिलों में आपसी उल्फत पैदा कर सकता है, और यह भी कहा गया कि अगर सारे संपत्ति खर्च कर दी जाती, तो भी यह नहीं हो सकता था। Nyaya दर्शन के "Pramana" (प्रमाण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी बात का प्रमाण होना चाहिए। आयत में यह दावा किया गया है कि केवल अल्लाह ही यह काम कर सकता है, लेकिन यह कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया कि क्यों यह केवल अल्लाह ही कर सकता है और किसी अन्य तरीके से यह संभव नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है कि अल्लाह के अलावा कोई और व्यक्ति या शक्ति यह कार्य कर सकती है।

आयत 64 (सूरए अन्फाल, 8:64)
अनुवादः "ऐ रसूल तुमको बस ख़ुदा और जो मोमिनीन तुम्हारे ताबेए फरमान (फरमाबरदार) है काफी है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
इस आयत में कहा गया है कि मुसलमानों के लिए केवल अल्लाह और उसके फरमाबरदार लोग ही पर्याप्त हैं। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का विषय) के सिद्धांत के अनुसार, इस प्रकार के दावे में यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि यह ज्ञान कहाँ से आता है और किस पर आधारित है। आयत में कहा गया है कि केवल अल्लाह और उसके फरमाबरदारों पर विश्वास करना पर्याप्त है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि यह ज्ञान किस आधार पर सही है और क्यों यह पर्याप्त है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें इस ज्ञान के प्रमाण या आधार का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 65 (सूरए अन्फाल, 8:65)
अनुवादः "ऐ रसूल तुम मोमिनीन को जिहाद के वास्ते आमादा करो (वह घबराए नहीं ख़ुदा उनसे वायदा करता है कि) अगर तुम लोगों में के साबित क़दम रहने वाले बीस भी होगें तो वह दो सौ (काफिरों) पर ग़ालिब आ जायेगे और अगर तुम लोगों में से साबित कदम रहने वालों सौ होगें तो हज़ार (काफिरों) पर ग़ालिब आ जाएँगें इस सबब से कि ये लोग ना समझ हैं।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि अगर मुसलमानों के पास पक्के और मजबूत कदम रखने वाले 20 लोग भी होंगे तो वे 200 काफ़िरों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। Nyaya दर्शन के "Vyapti" सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में युद्ध की स्थिति में संख्या और विजय के बीच एक अनिवार्य संबंध प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह बिना किसी प्रमाण या तात्त्विक आधार के एक सामान्य धारण है। इसमें कोई व्यावहारिक तथ्य या सिद्धांत नहीं दिया गया कि कैसे संख्या में कमी होने पर भी मुसलमानों को काफ़िरों पर विजय मिल सकती है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि संख्या और विजय के बीच कोई ठोस अनिवार्य संबंध प्रस्तुत नहीं किया गया है।

सारांश:
इन आयतों में जो विचार व्यक्त किए गए हैं, वे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में किसी कार्रवाई के तात्त्विक कारणों का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया, और इसमें अधिकतर दावे विश्वासों और भावनाओं पर आधारित हैं। Nyaya दर्शन में किसी भी निर्णय का एक प्रमाणित और तात्त्विक आधार होना चाहिए, जो इन आयतों में नहीं दिखाई देता।

आयत 66 (सूरए अन्फाल, 8:66)
अनुवाद: "अब ख़ुदा ने तुम से (अपने हुक्म की सख़्ती में) तख़्फ़ीफ (कमी) कर दी और देख लिया कि तुम में यक़ीनन कमज़ोरी है तो अगर तुम लोगों में से साबित क़दम रहने वाले सौ होगें तो दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगें और अगर तुम लोगों में से (ऐसे) एक हज़ार होगें तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे और (जंग की तकलीफों को) झेल जाने वालों का ख़ुदा साथी है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि अगर मुसलमानों के पास सही संख्या में मजबूत और ثابت कदम रखने वाले लोग होंगे तो वे काफ़िरों पर विजय प्राप्त करेंगे। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) सिद्धांत के अनुसार, किसी भी कथन या क्रिया का एक प्रमाणित कारण होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि केवल संख्या के आधार पर मुसलमानों की जीत तय होती है, लेकिन इसके पीछे कोई ठोस कारण या व्यावहारिक तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है। सिर्फ अल्लाह के हुक्म और विश्वास पर आधारित यह दावा एक ठोस कारण या तर्क की कमी को दर्शाता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" (कारण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी निर्णायक कारण का समर्थन नहीं दिया गया है कि संख्या और जंग की कठिनाइयों के बीच क्या अनिवार्य संबंध है।

आयत 67 (सूरए अन्फाल, 8:67)
अनुवाद: "कोई नबी जब कि रूए ज़मीन पर (काफ़िरों का) खून न बहाए उसके यहाँ क़ैदियों का रहना मुनासिब नहीं तुम लोग तो दुनिया के साज़ो सामान के ख़्वाहा (चाहने वाले) हो और ख़ुदा (तुम्हारे लिए) आख़िरत की (भलाई) का ख्वाहा है और ख़ुदा ज़बरदस्त हिक़मत वाला है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि एक नबी के लिए काफ़िरों का खून बहाना जरूरी है और अगर ऐसा नहीं होता तो कैदियों का रहना उचित नहीं है। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, अगर यह स्थिति उत्पन्न होती है, तो इसका परिणाम स्पष्ट और अनिवार्य होना चाहिए। आयत में इस कथन के लिए कोई वैध और व्यावहारिक कारण नहीं दिया गया कि काफ़िरों का खून बहाए बिना कैदी रखना क्यों उचित नहीं है। इस संबंध में कोई भी अनिवार्य और प्रमाणित सिद्धांत नहीं दिया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें इस कार्रवाई और परिणाम के बीच कोई अनिवार्य और प्रमाणित संबंध नहीं बताया गया है।

आयत 68 (सूरए अन्फाल, 8:68)
अनुवाद: "और अगर ख़ुदा की तरफ से पहले ही (उसकी) माफी का हुक्म आ चुका होता तो तुमने जो (बदर के क़ैदियों के छोड़ देने के बदले) फिदिया लिया था, उसकी सज़ा में तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होकर रहता।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि अगर अल्लाह की माफी का आदेश न होता तो क़ैदियों को छोड़ने के बदले फिदिया लेने पर मुसलमानों को सजा मिलती। Nyaya दर्शन के "Pramana" (प्रमाण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी दावे का प्रमाण होना चाहिए। इस आयत में माफी का आदेश अल्लाह से आया था, लेकिन इसका कोई प्रमाण या कारण नहीं प्रस्तुत किया गया कि यह आदेश क्यों जरूरी था और इसकी आवश्यकता क्यों थी। यह विश्वास और कथन पर आधारित है, लेकिन कोई व्यावहारिक प्रमाण नहीं दिया गया।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" (प्रमाण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें इस आदेश का प्रमाण और कारण नहीं दिया गया है कि क्यों फिदिया लेने पर सजा जरूरी होती।

आयत 69 (सूरए अन्फाल, 8:69)
अनुवाद: "उसकी सज़ा में तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होकर रहता तो (ख़ैर जो हुआ सो हुआ) अब तुमने जो माल ग़नीमत हासिल किया है उसे खाओ (और तुम्हारे लिए) हलाल तय्यब है और ख़ुदा से डरते रहो बेशक

ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि जो फिदिया लिया गया था, यदि वह अल्लाह के आदेश से सही न होता, तो मुसलमानों पर सजा आती। लेकिन क्योंकि अल्लाह की माफी का आदेश था, इस लिए उन्हें सजा नहीं मिली। फिर इसे हलाल और तय्यब बताया गया है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कार्य का एक स्पष्ट कारण होना चाहिए। यहाँ पर कोई ठोस कारण नहीं बताया गया कि क्यों ग़नीमत का माल हलाल और तय्यब है, इसके अलावा यह सिर्फ अल्लाह के आदेश पर निर्भर है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ग़नीमत के हलाल होने का कोई प्रमाण या कारण नहीं बताया गया है।

आयत 70 (सूरए अन्फाल, 8:70)
अनुवाद: "ऐ रसूल जो क़ैदी तुम्हारे कब्ज़े में है उनसे कह दो कि अगर तुम्हारे दिलों में नेकी देखेगा तो जो (माल) तुम से छीन लिया गया है उससे कहीं बेहतर तुम्हें अता फरमाएगा और तुम्हें बख़्श भी देगा और ख़ुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि कैदियों से कहा जाए कि यदि वे नेकी दिखाएं तो उन्हें अल्लाह से बेहतर पुरस्कार मिलेगा। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का विषय) के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में यह ज्ञान दिया गया है कि यदि कोई व्यक्ति सच्ची तौबा करता है और नेकी दिखाता है, तो उसे अल्लाह से बेहतर पुरस्कार मिलेगा। हालांकि, यह ज्ञान विश्वास पर आधारित है और इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि अल्लाह ने ऐसा वादा किया है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें इस ज्ञान का कोई प्रमाण नहीं दिया गया है कि नेकी करने से अल्लाह से बेहतर पुरस्कार मिलेगा।

सारांश:
इन आयतों में जो विचार व्यक्त किए गए हैं, वे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इनमें अधिकतर दावे विश्वासों पर आधारित हैं, और इनका कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। Nyaya दर्शन में किसी भी निर्णय का एक प्रमाणित और तात्त्विक आधार होना चाहिए, जो इन आयतों में नहीं दिखाई देता।

आयत 71 (सूरए अन्फाल, 8:71)
अनुवाद: "और अगर ये लोग तुमसे फरेब करना चाहते हैं तो ख़ुदा से पहले ही फरेब कर चुके हैं तो (उसकी सज़ा में) ख़ुदा ने उन पर तुम्हें क़ाबू दे दिया और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफकार हिकमत वाला है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि अगर काफ़िर मुसलमानों से फरेब करना चाहते हैं तो पहले ही उन्होंने ख़ुदा से फरेब किया है, और ख़ुदा ने मुसलमानों को उनका काबू करने की ताकत दी है। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, इस कथन का आधार यह होना चाहिए कि फरेब करने का एक अनिवार्य परिणाम है–अर्थात यदि कोई व्यक्ति फरेब करता है तो उसका परिणाम यह होता है कि उसे काबू कर लिया जाता है। हालांकि, इस आयत में यह परिणाम केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई व्यावहारिक आधार या प्रमाण नहीं दिया गया है कि फरेब करने का ऐसा परिणाम निश्चित रूप से होता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें फरेब करने के परिणाम के बीच कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 72 (सूरए अन्फाल, 8:72)
अनुवाद: "जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत की और अपने अपने जान माल से ख़ुदा की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को जगह दी और हर (तरह) उनकी ख़बर गीरी (मदद) की, यही लोग एक दूसरे के (बाहम) सरपरस्त दोस्त हैं और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत नहीं की तो तुम लोगों को उनकी सरपरस्ती से कुछ सरोकार नहीं-यहाँ तक कि वह हिजरत एख़्तियार करें और (हा) मगर दीनी अम्र में तुम से मदद के ख़्वाहा हो तो तुम पर (उनकी मदद करना लाज़िम व वाजिब है मगर उन लोगों के मुक़ाबले में (नहीं) जिनमें और तुममें बाहम (सुलह का) एहदो पैमान है और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा (सबको) देख रहा है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

इस आयत में मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि यदि कोई व्यक्ति हिजरत करता है और जिहाद में भाग लेता है, तो वह उनकी मदद करने के योग्य है, जबकि जो लोग हिजरत नहीं करते, उनकी मदद करना आवश्यक नहीं है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी निर्देश या आदेश का एक स्पष्ट और कारणपूर्ण आधार होना चाहिए। इस आयत में कहा गया है कि हिजरत करने और जिहाद में भाग लेने के कारण मुसलमानों को एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए, लेकिन इस संबंध में कोई ठोस कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है कि क्यों सिर्फ़ हिजरत करने वाले लोग ही एक-दूसरे की मदद के योग्य हैं।

निष्कर्ष:

यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें हिजरत करने वालों के मदद योग्य होने का कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया है।

आयत 73 (सूरए अन्फाल, 8:73)

अनुवाद: "और जो लोग काफ़िर हैं वह भी (बाहम) एक दूसरे के सरपरस्त हैं अगर तुम (इस तरह) वायदा न करोगे तो रूए ज़मीन पर फ़ितना (फ़साद) बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद होगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

इस आयत में कहा गया है कि यदि मुसलमान काफ़िरों से सहयोग नहीं करेंगे तो पृथ्वी पर फसाद फैल जाएगा। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) सिद्धांत के अनुसार, यह कथन बताता है कि काफ़िरों से सहयोग न करने पर निश्चित रूप से फसाद होगा। हालांकि, यह कोई अनिवार्य संबंध नहीं दर्शाता, क्योंकि फसाद होने का एक और कारण हो सकता है जो इस आयत में उल्लेखित नहीं किया गया है। इसके अलावा, यह एक सामान्य भय फैलाने वाला बयान है, जो वास्तविक कारणों को स्पष्ट नहीं करता।

निष्कर्ष:

यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई ठोस प्रमाण या अनिवार्य संबंध नहीं बताया गया है कि काफ़िरों से सहयोग न करने पर निश्चित रूप से फसाद होगा।

आयत 74 (सूरए अन्फाल, 8:74)

अनुवाद: "और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत की और ख़ुदा की राह में लड़े भिड़े और जिन लोगों ने (ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुहाजिरीन को जगह दी और उनकी हर तरह ख़बरगीरी (मदद) की यही लोग

सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के वास्ते मग़फिरत और इज़्ज़त व आबरु वाली रोज़ी है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
इस आयत में मुसलमानों के बारे में कहा गया है कि जिन्होंने ईमान कुबूल किया, हिजरत की, और जिहाद में भाग लिया, वे सच्चे ईमानदार हैं, और उन्हें अल्लाह की माफी और इज्जत दी जाएगी। Nyaya दर्शन के "Prameya" (ज्ञान का विषय) सिद्धांत के अनुसार, यह आयत एक निश्चित ज्ञान का दावा करती है कि केवल हिजरत करने और जिहाद में भाग लेने से व्यक्ति सच्चा ईमानदार होता है। हालांकि, इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया है कि ईमान का सत्यापन केवल हिजरत और जिहाद पर आधारित होता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें इस ज्ञान का कोई प्रमाण नहीं दिया गया है कि सिर्फ हिजरत और जिहाद के आधार पर व्यक्ति ईमानदार होता है।

आयत 75 (सूरए अन्फाल, 8:75)
अनुवाद: "और जिन लोगों ने (सुलह हुदैबिया के) बाद ईमान कुबूल किया और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वह लोग भी तुम्हीं में से हैं और साहबाने क़राबत ख़ुदा की किताब में बाहम एक दूसरे के (बनिस्बत औरों के) ज़्यादा हक़दार हैं बेशक ख़ुदा हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ हैं।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग हिजरत करने के बाद जिहाद में भाग लेते हैं, वे मुसलमानों के अधिक हकदार होते हैं। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, यहाँ यह दावा किया गया है कि हिजरत और जिहाद करने का एक निश्चित कारण है, जो उनके हक़दारी को बढ़ाता है। हालांकि, इसके पीछे कोई स्पष्ट और ठोस कारण नहीं दिया गया है कि क्यों हिजरत और जिहाद करने से किसी की हक़दारी बढ़ती है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें हिजरत और जिहाद करने का कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया है कि इससे व्यक्ति का हक़दारी बढ़ता है।

सारांश:

इन आयतों में जो विचार व्यक्त किए गए हैं, वे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में अधिकतर दावे विश्वासों पर आधारित हैं और इनमें ठोस प्रमाण या कारण नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी निर्णय का एक प्रमाणित और तात्त्विक आधार होना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।